सारा सच

www. SaraSach.com

दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

♦वर्ष : 4 ♦अंक : 43 ♦ वीरवार 19 मई से 25 मई , 2022 ♦पृष्ठ:8 ♦मूल्य:3 रुपए, हिजरी 1443 R.N.I. NO. DELHIN/2018/76166

भाजपा की है 63 लाख लोगों के घरों–दुकानों पर बुलडोजर चलाने की तैयारी

यह आजाद भारत का सबसे बड़ा विध्वंस होगा : केजरीवाल

नई दिल्ली। दिल्ली में तीनों नगर निगमों के अतिक्रमण हटाओ अभियान पर विधायकों संग बैठक में मुख्यमंत्री अरविद केजरीवाल ने कहा कि भाजपा 63 लाख लोगों के घरों और दुकानों पर बुलडोजर चलाने की तैयारी में है। यह आजाद भारत का सबसे बड़ा विध्वंस होगा।

दिल्ली की कच्ची कॉलोनियों में 50 लाख जबकि झुग्गियों में 10 लाख लोग रहते हैं। इसके अलावा करीब तीन लाख प्रॉपर्टी की लिस्ट बनाई गई, जिनमें नक्शे के इतर बालकनी, कमरा जैसे अतिक्रमण को तोड़ा जाएगा। इस तरह करीब 63 लाख लोगों के घर पर बुलडोजर चलेंगे। मैं समझता हूं कि यह आजाद भारत का सबसे बड़ा विध्वंस होगा। उन्होंने कहा कि भाजपा शासित निगम क्षेत्रों में जिस घरों–दुकानों पर कार्रवाई की जा रही है, वह सही नहीं है। विधायकों से कहा कि आपको जेल भी जाना पड़े तो डरना मत, जनता के साथ खड़ा रहना है। इस तरह से बुलडोजर चलाना, दादागिरी और अपनी शक्तियों का गलत इस्तेमाल है। बैठक के बाद डिजिटल प्रेसवार्ता में केजरीवाल ने कहा कि पिछले कुछ हफ्तों से हम देख रहे हैं कि दिल्ली के अंदर भाजपा शासित नगर निगमों की तरफ से कई जगह बुलडोजर चलाए जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि पूरी दिल्ली से अवैध निर्माण और अतिक्रमण हटाएं जाएंगे। हम खुद चाहते हैं कि अतिक्रमण न

शेष पृष्ठ चार पर

राकेश टिकैत भारतीय किसान यूनियन से बर्खास्त

यूनियन के नए अध्यक्ष बने राजेश सिंह चौहान

लखनऊ । नए कृषि कानून के खिलाफ सरकार से मोर्चा लेने वाले राकेश टिकैत को भारतीय किसान यूनियन से बर्खास्त कर दिया गया है। वहीं, नरेश टिकैत को राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से हटा दिया गया है । फतेहपुर के राजेश सिंह चौहान भारतीय किसान यूनियन के नए अध्यक्ष बनाए गए है ।भारतीय किसान यूनियन के संस्थापक चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की पुण्यतिथि पर लखनऊ स्थित गन्ना किसान संस्थान में भाकियू नेताओं की एक बैठक हुई, जिसमें टिकैत परिवार के खिलाफ किसानों में उभरी नाराजगी के बाद रारेश टिकैत को बर्खास्त कर दिया गया। वहीं, नरेश टिकैत को भी भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय पद से मुक्त कर दिया गया। किसान नेताओं में टिकैत बंधुओ के प्रति नाराजगी दिखाई दी। राकेश टिकैत ने सरकार के नए कृषि कानून का विरोध किया था। यही नहीं राकेश टिकैत के आह्वान पर यूपी–दिल्ली बॉर्डर पर एक साल से ज्यादा आंदोलन चला। कृषि कानून के वापस होने के बाद ही ये आंदोलन खत्म हुआ था। राकेश टिकैत देश में उस समय छा गए थे, जब उन्होंने गाजीपुर बॉर्डर पर रोते हुए कहा था कि बीजेपी सरकार उनकी हत्या करवाना चाहती है। उनके रोने का ये असर हुआ कि आंदोलन और बड़े स्तर तक पहुंच गया। यही नहीं इस आंदोलन में पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी अहम भूमिका निभाई।

हरियाणा हमारे हिस्से का नहीं छोड़ रहा पानी : सत्येंद्र जैन

खट्टर ने लगाया राजनीतिकरण करने का आरोप

नई दिल्ली। हरियाणा से छोड़े जाने वाले पानी को लेकर एक बार फिर से सियासत तेज हो गई है। यमुना नदी के घटते जलस्तर के बीच दिल्ली के मंत्री सत्येंद्र जैन ने हरियाणा पर कम पानी छोड़ने का आरोप लगाया है। जिस पर हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर का बयान सामने आया है। जिसमें उन्होंने दिल्ली को पूरा पानी देने की बात कही और आम आदमी पार्टी पर इस मुद्दे को लेकर राजनीतिकरण करने का आरोप लगाया।

दिल्ली के मंत्री सत्येंद्र जैन ने कहा कि दिल्ली की यमुना नदी में हरियाणा की तरफ से जो पानी आता है वो 674.5 फीट होना चाहिए जो कम होकर 669 फीट रह गया है। इस वजह से दिल्ली में पानी की दिक्कत हो रही है। मैं हरियाणा से कहूंगा कि हमारे एग्रीमेंट के हिसाब

शेष पृष्ठ चार पर

वीआईपी कल्चर का होगा सफाया : भगवंत मान

पंजाब । पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान लगातार एक्शन मोड में बने हुए हैं। मान ने अब राज्य की जेलों में वीआईपी सेल को खत्म करने का फैसला लिया है। साथ ही आप सरकार ने जेलों में मिलने वाले मोबाइल फोन पर सख्त पाबंदी लगा दी है। इस आदेश के बाद जेलों में तेजी से सर्च ड्राइव चलया जा रहा है। अब तक 710 मोबाइल जेल से बरामद हुए हैं।

सीएम मान यह पहले ही साफ कर चुके हैं कि जेलों में अब वीआईपी कल्चर नहीं अपनाया जाएगा। अब जेल के अंदर से कोई भी अपराधी

मोबाइल के जरिए अपने काले कारोबार को बाहर नहीं चला पाएगा। साथ ही इसे लेकर लापरवाही बरतने वाले कुछ अधिकारियों को सस्पेंड भी किया गया है। आप सरकार ने कहा है कि अब सुधार घर असल मायनों में अपराधियों को सुधारेंगे और किसी भी तरीके की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी।

इससे पहले भगवंत मान गुरुवार को उन गायकों को चेतावनी दी जो कथित तौर पर अपने गीतों के जरिए बंदूक संस्कृति को प्रोत्साहित कर रहे हैं। उन्होंने इस तरह के चलन को अस्वीकार्य करार दिया और कहा कि इसमें शामिल लोगों से सख्ती से निपटा जाएगा। मान ने कुछ पंजाबी गायकों द्वारा बंदूक संस्कृति और गिरोहबाजी को प्रोत्साहन देने के चलन की निंदा की और उनसे आग्रह किया कि अपने गीतों के जरिये समाज में हिंसा नफरत और द्वेष फैलाने से

शेष पृष्ठ चार पर

राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य प्रतियोगिता मई–तीसरे साप्ताहिक के विजेता

प्रथम स्थान

भारती मिश्रा (उप्र)

दूसरा स्थान

प्रा.गायकवाड विलास (महाराष्ट्र)

तीसरा स्थान

डा. अशोक (बिहार)

चौथा स्थान

मुकेश बिस्सा (राजस्थान)

पांचवां स्थान

ओजेंद्र तिवारी दमोह (मप्र)

छठा स्थान

पदमा ओजेंद्र तिवारी (मप्र)

सातवां स्थान

शरद अजमेरा (मप्र)

आठवां स्थान

शाहाना परवीन (पंजाब)

नौवा स्थान

ओमप्रकाश बिश्नोई (राजस्थान)

दसवां स्थान

अनन्तराम चौबे अनन्त (मप्र)

संपादकीय

आधुनिक भारत में पत्रकारिता की दशा और दिशा

संपादक
सलीम अहमद

पत्रकारिता का प्रारंभ, भारत में राष्ट्रीय भावना के उत्कर्ष काल में हुआ और भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। हमारी पत्रकारिता सौ वर्ष से अधिक समय की राह तय करके कई ऊंचे–नीचे और तिरछे मोड़ से गुजरती हुई गतिशील है। इस दौरान पत्रकारिता में निखार आया, साथ ही इसे कई प्रकार की विकृतियों और धुंधलेपन से भी ग्रस्त होना पड़ा है। भारतीय पत्रकारिता के संदर्भ में यह विदित तथ्य है कि पत्र – पत्रिकाओं के प्रचार–प्रसार ने ही लोगों में सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना की ज्योति जगाई है। वंदनीय भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधवराव सप्रे, विष्णु पराड़कर जी, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे महान संपादकों से लेकर आधुनिक युग के करंजिया, अज्ञेय, अक्षय कुमार जैन, धर्मवीर भारती, चन्द्रगुप्त वेदालंकार, राजेन्द्र माथुर, मानकेकर, माचवे तथा सुधाकर पांडे जैसे कीर्ति स्तंभों से पत्रकारिता आलोकित होती रही है लेकिन बदलते समय के साथ अब समाचार पत्रों में काफी बदलाव आता जा रहा है। अब पहले जैसी निष्ठा और समर्पण भावना नहीं रही, साथ ही पत्रकारिता की मर्यादा की श्रेष्ठ परंपराओं का पालन नहीं हो रहा है।

ऐसी स्थिति के कई कारण हैं, जिनमें सब से मुख्य है कई पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन पर बड़े व्यावसायिक घरानों का प्रभुत्व। हालांकि पहले भी धनी परिवार प्रकाशन व्यवस्था में योगदान किया करते थे किंतु संपादक तथा संपादकीय क्षेत्रा उनके प्रभाव से अलग रहा करता था।

तुलनात्मक रूप में अब भी हिंदी पत्रकारिता में स्वतंत्र विचारधारा की कमी तथा पूर्वाग्रहों की अधिकता देखी जा सकती है। विशाल प्रतिष्ठानों से लेकर आंचलिक अखबारों तक में ऐसी घोषणा रहती है कि 'स्वतंत्रा विचारधारा का निर्भीक पत्र' किंतु वास्तविक स्थिति इससे अलग हैं। इस प्रसंग में राष्ट्रीय स्तर के एक हिंदी साप्ताहिक के संपादक का एक कटु कथन उल्लेखनीय है कि आज देश में ऐसा एक भी समाचार पत्र नहीं है जो किसी न किसी विचारधारा का समर्थन न करता हो।

हिंदी पत्रकारिता में विकृति तब से शुरू हुई जब से विचारधाराओं के नाम पर संपादकीय झुकाव किसी जूट मिल मालिक, किसी चीनी मिल मालिक, किसी कार निर्माता, किसी भवन निर्माता के व्यावसायिक हितों का पर्याय बन गए और भिन्न मत वालों की बात दबाना, बिगाड़ना कुछ का संपादकीय कर्म बन गया। यह बात भारत में केवल हिंदी समाचार पत्रों पर नहीं बल्कि अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की पत्र–पत्रिकाओं पर भी लागू होती है।

वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता इस बात की है कि अपनी मर्यादा और परंपरा का ध्यान रखते हुए पाठकों की अभिरूचि के अनुसार सामग्री प्रस्तुत करें। यह मानना होगा कि देश और विदेश में हिंदी पत्रकारिता तभी प्रखर, प्रबल तथा प्रभावी होगी, जब उनकी संपादकीय वैचारिक निष्ठाएं या विचारधारा राष्ट्रधर्म के प्रति हितबद्ध होंगी।

अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत के प्रति मोह को त्याग कर हमें अपनी राष्ट्रीयता, अपनी संस्कृति और अपनी भाषा के प्रति निष्ठा और सम्मान का भाव सदैव अपनाए रखना होगा, तब ही समाज तथा राष्ट्र को हिंदी पत्रकारिता सही दिशा देने में समर्थ हो सकेगी।

विकासशील पत्रकारिता में समय–समय पर कई प्रकार की बाधा–विफलताएं भी आती रही हैं। वर्तमान में यह देखा जा रहा है कि खोजी पत्राकारिता के नाम पर सनसनीखेज घटनाओं, वासना कांडों और कुत्सित कार्यो को प्रमुखता देने की प्रवृत्ति चल पड़ी है। ऐसी घटनाओं को प्रमुखता देकर छापना, सामाजिक हित में उचित नहीं है। इस प्रकार की खबरों को बार–बार बढ़ने से पाठक की संवेदना कुंद हो जाती है और बाद में इस प्रकार की बड़ी और भयावह घटना की जानकारी से वह आंदोलित नहीं हो सकेगा। आवश्यकता इस बात की है कि सामाजिक परिवेश में घटने वाली छोटी–छोटी मानवीय घटनाओं को भी स्थान दें जो प्यार, करूणा, त्याग तथा अन्य प्रेरक प्रसंगों को उद्भासित करती हों। पत्रकारिता जगत में मनमानी यानी निरंकुशता वांछित नहीं है। इस संदर्भ में प्रेस काउंसिल तथा उसके अध्यक्ष महोदय की चेतावनी पर भी ध्यान देना हितकर है। विशेषकर वर्तमान अध्यक्ष जस्टिस मार्कंडेय काटजू के कथनों पर गौर करने की जरूरत है जिन्होंने समाचार पत्रों के साथ ही टी. वी. चैनलों की उत्तरदायित्वहीनता की कटु आलोचना की है।

Chetan Srivastava
98100 63006, 93100 63006
kaagzaat
कागज़ात
a complete property Documentation point
DDC
DELHI DOCUMENTATION CENTRE
Specialists in : Drafting & Registration of documents for
Free Hold, Lease Hold, Commercial, Industrial, DDA, L&DO Society
Properties & Flats wih Computer Processing & Manual Typing
LEASE HOLD TO FREE HOLD A SPECIALITY
Off : UG-28 Suneja Tower-I
Distt. Centre Janak Puri, New Delhi-58
Ph : 2554 1618, 2561 7461
Br. Off :- Shop No.2 S-2/100
Old Mahavir Nagar, Near
Mangla Hospital, New Delhi-18

Chief Pattern SaraSach

Shabnam Fazil Khan

(Human Right Activist , RTI Activist , Social Reformer, international tv debate panelist)

आखिर कब तक ?

शबनम खान

1. यदि आप शासनिक स्तर पर न्याय चाहते हैं।
2. यदि आपकी पुलिस या अन्य किसी सरकारी विभाग द्वारा कोई सुनवाई नहीं हो रही है।
3. यदि कोई सरकारी अधिकारी अथवा कर्मचारी काम के बदले आपसे रिश्वत मांग रहा है।
4. यदि कोई आपका शारीरिक एवं मानसिक रूप से शोषण कर रहा है।
5. यदि आप जीवनसाथी या किसी अन्य संबंधी द्वारा प्रताड़ित किए जा रहे हैं।
6. यदि किसी कार्यरत महिला/पुरुष का कार्यालय में अन्य तरीके से शारीरिक या मानसिक रूप से शोषण हो रहा है।
7. यदि किसी बुजुर्ग को परिवार में उचित सम्मान नहीं मिल रहा है।
8. यदि किसी शिक्षण संस्थानों में छात्र अथवा छात्राओं का मानसिक या शारीरिक स्तर पर शोषण हो रहा है।
9. यदि कोई आपको बाल मजदूरी के लिए बाध्य कर रहा है।
10. यदि शिक्षण संस्थानों द्वारा आपसे डेवलपमेंट चार्ज या डोनेशन के नाम पर अवैध धन वसूला जा रहा है।
11. यदि उपभोक्ता किसी सेवा या उत्पाद से संतुष्ट नहीं है।
12. यदि सरकारी अस्पतालों या प्राइवेट अस्पतालों में आपकी देख रेख उचित रूप से नहीं हो रही है तो घबराए नहीं, सम्पर्क करें:–

Miss Shabham Khan (President)
(Human Rights Activist)
EK Koshish Aur Abhi (EkAA)
N.G.O.
Dedicated to Human Rights & Social Justice
E-mail :
Khanshabnam.humarightactvist@Yahoo.in
www.ekkoshishaurabhi.org

अंतिम तारीख का इंतजार क्यों?

प्रायः हम देखते हैं कि मध्यम वर्गीय परिवारों में एक निश्चित आय होती है तथा उसी अनुपात में निश्चित खर्चे भी होते हैं जैसे बिजली, टेलीफोन, जल, घर, किराया, बीमा (जीवन बीमा, वाहन व अन्य), बैंक ऋण की किस्तें, क्रेडिट कार्ड, किसी संस्था का वार्षिक सदस्यता शुल्क, बच्चों के स्कूल की मंथली फीस आदि। इन सभी प्रकार की सेवाओं के लिए भुगतान की एक निश्चित समयावधि तय होती है। कुछ सेवाओं में निश्चित समयावधि में भुगतान न होने पर सुविधा हटाये जाने का प्रावधान होता है तो कुछ अधिक भार के रूप में अधिक राशि चुकानी पड़ती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि अंतिम तिथि पर अक्सर ऐसे भुगतान केंद्रों पर भीड़ कुछ ज्यादा ही होती है।

अन्य कारणों में हो सकता है कि अंतिम तिथि को कोई अवकाश घोषित हो जाए, हड़ताल, बंद आदि हो या आपको शहर से कहीं बाहर जाना पड़ जाये या अंतिम दिन आपका नम्बर न लगे। ऐसी अवस्था में यदि आपके पास उस दिन धनाभाव के कारण बिल जमा नहीं कराये, तब स्थिति संकट में पड़ जायेगी तथा बिल का भुगतान पेनल्टी रकम के साथ जमा कराना पड़ेगा। अपने स्वयं की लापरवाही तथा अविवेक के कारण अर्थदंड लगेगा तथा तनाव में वृद्धि होगी।

इन सभी परेशानियों से बचने के लिए हमें चाहिए कि हम ऐसे सभी बिलों का भुगतान शीघ्र कर लें यानी निर्धारित समय के पूर्व ही जमा करा देना अच्छा रहेगा। कुछ लोगों का यह विचार होता है कि यदि अंतिम तिथि बाद की है तो आज ही हम हमारी जेब खाली क्यों करें परन्तु जब आज नहीं तो कल, जेब खाली होनी ही है तो फिर हर्ज क्या है? अंतिम तिथि का इंतजार करने में हम अपनी परेशानियों को कम करने के बजाय बढ़ाते ही हैं। बेहतर तो यही होगा कि जितनी जल्दी हो सके, हम अपने दायित्वों का भुगतान कर भविष्य की परेशानियों से बचें।

सारा सच

साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र

-मुख्य सम्पादक-
सलीम अहमद
-सह संपादक-
फहमीना सिद्दीकी
शाहनवाज सिद्दीकी
-सलाहकार-
शबनम खान
संजय दुबे (कल्पना फाउंडेशन)
दीपक त्यागी (एडवोकेट),
प्रदीप महाजन (आईएनएस),
-छायाकार-
सुधीर कुमार, साजिद अली
ब्यूरो/विज्ञापन प्रतिनिधि
-दिल्ली-
रविन्दर कुमार, एस सिद्दीकी,
अशफाक अली
-राजस्थान-
जयपुर-विशाल चौहान
-हिमाचल प्रदेश-
शिमला
शान मो. खान
-उत्तर प्रदेश-
आगरा-हसीब हुसैन
अलीगढ़-मो. फारूख
फिरोजाबाद-फैसल मसरूर
मुज्जफर नगर-मो. इलियास

कामन सिविल कोड बेहद मूर्ख राजनीतिक मुद्दा

कामन सिविल कोड बेहद मूर्ख बनाने वाला राजनीतिक मुद्दा रहा है। यह ऐसा मुद्दा है जिस पर आप कहीं भी, कैसे भी, किसी को भी मूर्ख बना सकते हैं। हैरानी की बात यह है कि इस मुद्दे पर अभी तीस चालीस साल पहले बड़े जंगी आंदोलन हुए हैं। मूर्खों की कहीं कमी नहीं है।आज तक किसी भी सरकार ने यह नहीं बताया कि कामन सिविल कोड कैसा होगा लेकिन इस पर भूचाल है, विवाद है। अभी भी गृहमंत्राी कहीं कामन सिविल कोड की बात कह गए लेकिन वह भी यह बता कर नहीं गए कि कामन सिविल कोड क्या है और कैसा होगा?

देश की आधी से ज्यादा जनता को यह भी जानकारी नहीं है कि कामन सिविल कोड किस बला का नाम है। हम हमारे देश में कानून की जानकारी का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि एक शख्स ने मुझसे कहा कि मैंने तो जिंदगी में सिर्फ टीवी में कोर्ट देखी है। कामन सिविल कोड बेहद सिंपल विषय है। इस पर इतनी राजनीति कर दी गई, आश्चर्य करने वाला है। भारत की सारी प्रगति तो राजनीतिक मुद्दों ने रोक रखी है। शादी, तलाक, बच्चा गोद, उत्तराधिकार और मेंटेनेंस के मामलों को सभी नागरिकों के लिए एक जैसा बनाया जाना ही कामन सिविल कोड है।

आज भारत में कामन सिविल कोड लागू नहीं होकर भी लागू है। सब कुछ सभी के लिए एक जैसा कर दिया गया है। दूसरी शादी करने पर भले किसी विशेष जाति को छूट हो लेकिन दूसरी शादी को सुप्रीम कोर्ट क्रूरता मान चुका है। एफआईआर उधर नहीं होती तो क्रूरता में तो हो ही जाती है। भरण पोषण सभी महिलाओं को दिलवाया जा रहा है। सभी महिलाएं सीआरपीसी की 125 में भरण पोषण ले रही है। तलाक के लिए हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को ही कोर्ट में पेटिशन लगाना होती है। घर बैठे या काजी जी के वहां के तलाक को सुप्रीम कोर्ट ने मानने से पूरी तरह इनकार कर दिया है। यहां तक कि नोटरी वकील की तस्दीक को भी तलाक नहीं माना जाता है। उन्हें भी साफ हिदायत दी गई है कि आप ऐसा तलाक नहीं करवाएंगे।उत्तराधिकार भी लगभग लगभग एक जैसा ही है। कोई विशेष अंतर नहीं है। सुप्रीम कोर्ट लड़का लड़की दोनों को बराबर का अधिकार मानकर चल रही है।बच्चा गोद लेने के लिए भी रजिस्टर्ड डाक्युमेंट चाहिए। कोई भी घर बैठी कार्यवाही को कोर्ट किसी भी सूरत में नहीं मान रही है। यहां तक अब तो कोरे कागज की वसीयत वाला मामला भी खत्म ही हो गया है क्योंकि ऐसे कोरे कागज की वसीयत पर बहुत सारी आपत्ति आ जाती है। लोग आजकल वसीयत को भी रजिस्टर कर रहे हैं।

मुंडका में आग को लेकर आप ने एमसीडी पर उठाए गंभीर सवाल

नई दिल्ली । दिल्ली के मुंडका इलाके की बिल्डिंग में लगी आग के बाद आम आदमी पार्टी के एमसीडी प्रभारी दुर्गेश पाठक ने एमसीडी पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा है कि जहां यह बिल्डिंग है, वह एक्सटेंडेड लाल डोरा की जमीन है. इस तरह की प्रॉपर्टी पर कोई कमर्शल एक्टिविटी नहीं हो सकती ।

उल्लेखनीय है कि 2016 में एमसीडी ने इसका लाइसेंस इशु किया था, लेकिन 1 साल बाद किसी की शिकायत पर उस लाइसेंस को कैंसिल कर दिया गया. लेकिन उसके बावजूद पूरी एक्टिविटी चलती रही. फिर 2019 में सुप्रीम कोर्ट द्वारा बनाई गई मॉनिटरिंग कमेटी ने इस बिल्डिंग को सील कर दिया. इसका फर्स्ट फ्लोर पूरी तरह से सील था, पेनल्टी भी लगाई गई, एमसीडी ने पेनल्टी भी वसूला लेकिन उसके बावजूद मॉनिटरिंग कमिटी ने सीलिंग नहीं खोली. आजतक यह बिल्डिंग सील है, लेकिन इसमें कमर्शियल एक्टिविटी हो रही थी।

दुर्गेश पाठक ने बताया कि यह बिल्डिंग पूरी तरह से इलीगल है. इसका नक्शा पास नहीं कराया गया था. दिल्ली में कोई भी बिल्डिंग बिना एमसीडी से नक्शा पास कराए नहीं बन सकती है यानी इसकी पूरी जानकारी बीजेपी की एमसीडी के पास थी, लेकिन उन्होंने आंख बंद रखी। इसमें भ्रष्टाचार किया गया, बिना भ्रष्टाचार के ऐसी एक्टिविटी नहीं हो सकती थी।

दिल्ली सरकार द्वारा फायर एनओसी न दिए जाने के आरोपों पर उन्होने सवाल उठाया कि फायर एनओसी तो तब दी जा सकती है, जब बिल्डिंग लीगल हो. जब यह बिल्डिंग ही इलीगल है, तो ये फायर एनओसी के लिए कैसे अप्लाई कर सकते थे। बीजेपी यह बताए कि इन्होंने फायर एनओसी के लिए कहां अप्लाई किया था. दुर्गेश पाठक ने कहा बिना फैक्ट्री लाइसेंस और फायर छब्व वाली औद्योगिक इकाइयों पर कार्रवाई के नॉर्थ एमसीडी के आदेश पर हजारों बार एमसीडी ऐसे आर्डर देती रहती है. ऐसे आर्डर से इनकी लूट का सिस्टम बन जाता है. बीजेपी इसका जवाब दे कि जब कंपनी के पास कमर्शियल लाइसेंस नहीं था, फिर कमर्शियल एक्टिविटी कैसे चलने दी गई। जब बिल्डिंग का नक्शा पास नहीं था, तो फिर उस बिल्डिंग में कैसे काम हो रहा था. जब मॉनिटरिंग कमिटी ने इसे सील कर दिया था और एमसीडी ने उसपर पेनाल्टी भी ले ली थी, तो फिर कैसे उसमें कमर्शियल एक्टिविटी हो रही थी।

अब स्कूली बच्चे दिल्ली को हरा-भरा बनाएंगे

नई दिल्ली। दिल्ली में पेड़ों के कटने से पर्यावरण पर प्रभाव पड़ रहा है। इसके कारण जैव विविधता की स्थिति भी खराब हो रही है। अब स्कूली बच्चे दिल्ली को हरा–भरा बनाएंगे। दिल्ली के प्रत्येक एरिया के सरकारी स्कूलों में बच्चों को पेड़–पौधे लगाने का जिम्मा सौंपा जाएगा।चालू सत्र (2022–23) से हरी और साफ दिल्ली का महत्व बताने के लिए स्कूलों में एक अगस्त से 15 अगस्त तक वन महोत्सव आयोजित किया जाएगा। इसके तहत वन विभाग ने शिक्षा विभाग को स्कूलों में डेढ़ लाख पौधे लगाने का दायित्व सौंपा है।

इसके लिए आगामी 10 अगस्त को वृक्षारोपण कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है।

सरकारी व सरकारी सहायता प्राप्त व निजी स्कूल प्राचार्यों को निर्देशित किया गया है कि इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में बच्चों का सक्रिय सहभगागिता हो। इस कार्यक्रम के तहत प्रत्येक स्कूल को ईको क्लब के माध्यम से 30 पेड़ व 70 झाड़ी वाले पौधे लगाना जरूरी किया गया है। इसकी देखभाल का जिम्मा भी स्कूलों को उठाना होगा। स्कूलों को वृक्षारोपण की मासिक रिपोर्ट भी शिक्षा निदेशालय को भेजनी होगी।

इस रिपोर्ट में यह भी बताना होगा कि कितने पेड़ जीवित हैं और कितने देखभाल नहीं होने से खराब हो गए। इस वन महोत्सव के लिए शिक्षा निदेशालय ने एक एक्शन प्लॉन तैयार किया गया है। सबसे पहले पूरे सत्र के दौरान स्कूलों को एक लाख पचास हजार पेड़–पौधे लगाने का लक्ष्य दिया गया है।

वहीं स्कूल कैंपस को हरा बनान के लिए जागरुकता अभियान भी चलाया जाएगा। इस दौरान सेमिनार, वेबिनार, निबंध, स्लोगन, पेटिंग प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएंगी।

शास्त्री पार्क वार्ड में कूड़ा घर खत्म उसी जगह पर बनवाई गई चौपाल

पूर्वी दिल्ली । गांधी नगर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत शास्त्री पार्क वार्ड में निगम पार्षद रोमेश चंद्र गुप्ता द्वारा अनोखी पहल की गई । उन्होंने एक बड़े कूड़े घर को बंद कराकर उसी जगह एक भव्य चौपाल का निर्माण करवाया।उल्लेखनीय है कि जिस जगह पर चौपाल का निर्माण करवाया गया है वहां पर अभी तक कूड़ा डाला जाता था । अब प्रधानमंत्री जी के स्वच्छता अभियान के तहत वहां पर एक प्लेटफार्म बनाकर उस पर बेंचे लगाकर और आसपास पौधे लगाकर इस स्थान को एक सुंदर स्थान बनाया।

ज्ञात रहे इससे पहले भी समुदाय भवन शास्त्री पार्क के साथ में एक भव्य चौपाल का निर्माण करवाया गया था जिसे जनता ने बहुत पसंद किया था इस चौपाल का शुभारंभ भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रमाकांत तिवारी जी द्वारा रिबन कटवा कर करवाया गया और पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता साबिर मंसूरी जी द्वारा नारियल से इसका शुभारंभ करवाया गया। कार्यक्रम में रोमेश चंद्र गुप्ता निगम पार्षद, पूजा शर्मा उपाध्यक्ष जिला महिला मोर्चा ,विनोद जैन मंत्री जिला शाहदरा, जितेंद्र तिवारी ,बंटी शर्मा, गजानन ठाकुर ,सचिन मिश्रा, सुनील गुप्ता, अशोक यादव जी, राजकुमार सोलंकी जी, राजकुमार वर्मा जी मोती जी शमीम अहमद जी दीपक गहलोत जी इत्यादि क्षेत्रवासी उपस्थित रहे ।

दिल्ली सचिवालय में एक जून से एकल प्रयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध

नई दिल्ली। दिल्ली सचिवालय में एक जून से एकल प्रयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगेगा। इस संबंध में पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने घोषणा की है। इसके तहत पहले चरण में दिल्ली सचिवालय के कार्यालय में एकल इस्तेमाल वाले पेन और पानी की बोतलों पर प्रतिबंध लगाया जाएगा। साथ ही एकल इस्तेमाल प्लास्टिक से बने बैनर, पोस्टर और खाने के लिए प्रयोग होने वाली कटलरी पर भी पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगा।

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा कि दिल्ली में बढ़ रहे प्रदूषण के खिलाफ ग्रीष्मकालीन कार्य योजना की शुरुआत की गई है। प्रदूषण को बढ़ावा देने में एकल प्रयोग प्लास्टिक भी अहम भूमिका निभाता है। इसमें री–कांटे, स्ट्रॉ, पॉलिथिन, प्लास्टिक गिलास होते हैं, जो फेंक दिये जाने पर पुनरू उपयोग में नहीं लाए जा सकते हैं। ऐसे में कई बार लोग इसे खत्म करने के लिए जमीन में दबा या जला कर नष्ट करने की कोशिश करते हैं, जोकि वायु, जल और भूमि प्रदूषण के लिए गंभीर खतरा भी है। वहीं, वजन में हलका होने के कारण कई बार यह देखा गया है कि यह इधर– उधर उड़कर आसपास की सीवेज या जल निकासी प्रणाली के चोकिंग का कारण बनता है, जो जल जमाव की समस्याओं को भी बढ़ावा देता है।पिछले साल अगस्त में केंद्रीय

पर्यावरण मंत्रालय ने एक जुलाई 2022 से पॉलीस्टाइनिन और विस्तारित पॉलीस्टाइनिन सहित पहचान की गई वस्तुओं के निर्माण, आयात, स्टॉकिंग, वितरण, बिक्री और उपयोग पर रोक लगाने के लिए एक अधिसूचना जारी की थी। इसके तहत एकल प्रयोग प्लास्टिक में ईयरबड, गुब्बारे के लिए प्लास्टिक की छड़ें, झंडे, कैंडी स्टिक, आइसक्रीम स्टिक, पॉलीस्टाइनिन (थर्मोकोल), प्लेट, कप, गिलास, कांटे, चम्मच, चाकू, स्ट्रॉ, ट्रे, रैपिंग या पैकेजिंग फिल्म, निमंत्रण कार्ड, सिगरेट के पैकेट, प्लास्टिक या पीवीसी बैनर जो 100 माइक्रोन से कम हैं व स्टिरर पर प्रतिबंध लगाने की बात कही गई थी।दिल्ली में सभी निर्माताओं, खुदरा विक्रेताओं, आम जनता और दुकानदारों को पहले ही 30 जून 2022 तक एकल प्रयोग वाले प्लास्टिक का कोई स्टॉक नहीं रखने के लिए कहा गया है। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति ने कच्चे माल के सभी निर्माताओं को प्रतिबंधित उत्पादों के उपयोग में लगे लोगों को प्लास्टिक की वस्तुओं की आपूर्ति बंद करने के लिए भी कहा है।

सारा सच

सारा सच एक जरिया है दुनिया की सबसे बड़ी प्रसिद्ध सोशल नेटवर्किंग साइट पर अपने कारोबार को बड़े लेवल पर बढ़ाने के लिए सारा सच अखबार/वेबसाइट में विज्ञापन देकर अपनी पब्लिसिटी करवाएं । क्योंकि सारा सच ने इन पर अपनी प्रोफाइल/आईडी बनाकर अपनी पहचान बनाई है और लोगों को अपने साथ जोड़कर हमेशा अपडेट रहता है।

सम्पर्क करें : +91-999-000-7067

E-mail : sarasach786@Gmail.com

JOIN-US Facebook Google Plus

IPCS
Indian Pest Control Services
PRE & POST CONSTRUCTION
ANTI-TERMITE TREATMENT
Dr. P. K. Sahani
(Entomologist)
WZ-250 C, NEAR MTNL EXCHANGE
OPP. PUSA INSTITUTE INDER PURI,
NEW DELHI-110012
PH. 64522051 M. 9810437316
E-mail: pks0573@rediffmail.com
ipcs.7340@rediffmail.com

मार्केटिंग, एक्जिक्यूटिव, डिस्टीब्यूटर तथा विज्ञापन प्रतिनिधि सम्पर्क करें

सारा सच को चाहिए मेहनती, संघर्षशील, जुझारू ब्यूरो चीफ (सभी जिला), संवाददाता

पाठकों के लिए विशेष

जो भी पाठक अच्छी कहानी, कविताएं खबर इत्यादि देगा उसे मीडिया से जुड़ने का मौका मिलेगा

विज्ञापन

दो के साथ एक फ्री	या	30 प्रतिशत की छूट

हमारे समाचार पत्र के जरिए अपने व्यापार को बढ़ाएं या वेबसाइट पर अपनी पब्लिसिटी के लिए

सम्पर्क करें:

91-999-000-7067

www.sarasach.com

Email : sarasach786@Gmail.com

न्याय जनता की ही भाषा में होना चाहिए

जापान की शीर्ष अदालत में जापानी में कार्यवाही होती है। चीन और फ्रांस सहित ऐसे तमाम देश हैं, जो जनता के लिए न्याय को जनता की भाषा में सुलभ करा रहे हैं। अफसोस, हम देश की आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं लेकिन आज भी जनता की भाषा में न्याय की तस्वीर स्याह ही है। अंग्रेजों का किया गया खेल अभी तक बदस्तूर जारी है।

देश की 80 प्रतिशत आबादी जिस भाषा को अच्छे से समझती है, अच्छे से बोलती है और अच्छे से लिखती है, उसके लिए उसमें न्याय पाना दुर्लभ है। दरअसल भारतीय संविधान के अनुच्छेद 348(1) में यह प्रविधान किया गया है कि उच्च अदालतों की कार्यवाही अंग्रेजी में की जाएगी, हालांकि अनुच्छेद 348(2) में इसमें बदलाव किए जाने का भी प्रावधान है।

समय–समय पर कई राज्यों ने स्थानीय भाषाओं में अदालत का कामकाज शुरू किया, लेकिन अंग्रेजी वाली बात नहीं आ पाई। अब एक नई उम्मीद जगी है जब देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ प्रधान न्यायाधीश एनवी रमणा ने भी न्याय प्रणाली के भारतीयकरण पर जोर दिया गया है।

हाल ही में मुख्यमंत्रियों और हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि किसी भी देश में सुराज का आधार न्याय होता है। इसलिए न्याय जनता से जुड़ा हुआ और जनता की भाषा में होना चाहिए। जब तक न्याय के आधार को आमजन नहीं समझता, उसके लिए न्याय और राजकीय आदेश में फर्क नहीं होता।

भारतीय आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधारों पर वर्ष 2000 में गठित मलिमथ समिति ने 2003 में अपनी रिपोर्ट दी थी। समिति ने सुझाव दिया था कि सभी क्षेत्रीय भाषाओं में संहिता की एक अनुसूची तैयार की जाए ताकि अभियुक्त को अपने अधिकारों के बारे में पता हो। साथ ही यह जानकारी भी मिले कि उन्हें कैसे लागू किया जाता है और उन अधिकारों से वंचित होने पर किससे संपर्क करना चाहिए। न्याय सुनिश्चित करने में यह अहम है।

एक बड़ी आबादी के लिए न्यायिक प्रक्रिया से लेकर फैसलों तक को समझना मुश्किल होता है। अदालतों में स्थानीय भाषाओं को प्रोत्साहन देने की जरूरत है। इससे देश के सामान्य नागरिक का न्याय प्रणाली में भरोसा बढ़ेगा।

कहा जाता है कि न्याय होना जितना जरूरी है, न्याय होते हुए दिखना भी उतना ही जरूरी है। यह न्यायपालिका में लोगों के विश्वास को मजबूत करता है। दुर्भाग्य से भाषा की दीवार देश में ऐसा होने नहीं देती। न्याय पाने के जितने बड़े दरवाजे हैं, उन सबकी चाबी अंग्रेजी है। किसी ग्रामीण के लिए सुप्रीम कोर्ट किसी विदेश से कम नहीं। वहां उसकी समझ में आने वाली भाषा बोलने वाला कोई नहीं दिखता है। यही दीवार उसके और न्याय के बीच खड़ी रहती है।

भारत में न्याय अंग्रेजों की सिखाई हुई व्यवस्था नहीं है। न्याय को लेकर हमारा हजारों वर्ष पुराना इतिहास है। आज भी न्याय की बात हो तो राजा विक्रमादित्य का नाम लिए बिना बात पूरी नहीं होती। भारत के इतिहास में एक बहुत प्रभावी, भरोसेमंद और लोकतांत्रिक न्यायिक प्रणाली रही है। ऐसे में यह देखना दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि वर्तमान निर्णयों में अधिकांश उद्धरण पश्चिमी न्यायशास्त्र से लिए गए हैं। न्याय की प्रक्रिया में हमारी प्राचीन प्रणाली को बहुत कम मान्यता दी जाती है। न्याय के क्षेत्रा में हमारे कमजोर वर्तमान का यही कारण है। संभवतः यही कारण है कि मुख्य न्यायाधीश एनवी रमणा ने भाषा के साथ न्याय के भारतीयकरण पर भी जोर दिया है।

भारत की वर्तमान न्यायिक प्रणाली की उत्पत्ति का स्रोत मूलतः न्यायपालिका की ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रणाली में है। इसकी सबसे बड़ी खामी यह है कि औपनिवेशिक काल में न्यायपालिका काफी हद तक स्वामी–सेवक के दृष्टिकोण से स्थापित की गई थी, न कि जनता के दृष्टिकोण से। इसके अलावा न्यायालयों की कार्यप्रणाली और शैली भारत की स्थानीय जटिलताओं से मेल नहीं खाती है। औपनिवेशिक मूल के कारण यह व्यवस्था, प्रथा और नियम भारतीय आबादी की जरूरतों के लिए उपयुक्त नहीं है।

सर्वोच्च और उच्च न्यायालयों में सुनवाई से लेकर फैसले तक, हर जगह अंग्रेजी का ही वर्चस्व रहता है। बहुत से मामलों में वादी और प्रतिवादी को यह भी समझ नहीं आता है कि उनकी याचिकाओं में लिखा क्या है और अपने अधिकारों के बारे में उन्हें कैसे पता चले। ऐसी परिस्थिति में वे पूरी तरह से वकीलों के भरोसे रहते हैं। –साभार

शासन

प्रस्तुति
अनन्तराम चौबे
अनन्त (मप्र)

नेता जो भी बन जाता है
बस लच्छेदार बातें करता है ।
जो लच्छेदार भाषण देता है
वहीं तो सच्चा नेता बनता है ।

नेता शासक या शासन हो
कहते हैं जनता के सेवक हैं ।
कैसी सेवा जनता की करते
कहने को जनता के सेवक हैं ।

नेता चुनाव जब लड़ते हैं
बोट मांगने घर घर जाते
हाथ जोड़ प्रार्थना करते
सेवा करने का मौका चाहते ।

चुनाव जीत सत्ता पा जाते
फिर शासन वहीं चलाते हैं ।
शासक उनके अधीन होते हैं
मंत्री की कुर्सी जो पा जाते हैं ।

राजनीति के दांव पेंच ही
सत्ता पाते ही दिखलाते हैं ।
चुनाव में जो पैसा लगाते हैं
ब्याज के साथ वसूल करते हैं ।

राजनीति का खेल निराला
शासन पाकर दिखलाते हैं ।
मंत्री की कुर्सी जब पा जाते हैं
सारा सच शासन वही चलाते हैं ।

शासक चाहे जैसा भी हो
शासन के अधीन सब रहते हैं।
शासन और शासक मिल करके
सारा सच जनता का खून चूसते हैं ।

भाई भतीजों के साथ में
मिलकर भ्रष्टाचार करते हैं ।
सत्ता की कुर्सी पर जब तक है
सत्ता के सुख में भूले रहते हैं ।

सेवक बनकर बोट मांगना
यही तो राजनीति होती हैं ।
राजनीति के खेल निराले
बस राजनीति यही कहती है ।

सेवक बनकर सत्ता पा लेना
सारा सच सेवा भाव कहलाता है ।
सत्ता का सुख जब मिलता है
फिर कौन कहां याद आता है ।

ताज महल, कुतुब मीनार, लाल किला, मुगल, राजपूत, शासन, किले, महल, इतिहास

प्रस्तुति
शरद अजमेरा
(मप्र)

झूठ का महल चाहे जितना बड़ा क्यों ना हो ।
सच का बुलडोजर उसे गिरा ही देता है ।।

अकबर का पुत्र जहांगीर एवं जहांगीर का पुत्र शाहजहां जिसका जन्म लाहौर में 1592 में हुआ और जिसने 1627 से 1658 तक शासन किया शाहजहां का शासनकाल स्थापत्य कला का स्वर्ण युग कहा जाता है शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताज महल की याद में आगरा में ताजमहल का निर्माण करवाया जो कि अभी भी विवाद की स्थिति में है । शाहजहां का पुत्र औरंगजेब था शाहजहां और मुमताज महल की छठी संतान और तीसरा बेटा जिसे औरंगजेब या आलमगीर के नाम से जाना जाता था भारत पर राज करने वाला छठा मुगल शासक जिसने भारत पर 50 साल से भी अधिक राज किया ।

मुगल काल के अंत समय औरंगजेब ने खूब आतंक मचाया था यह काल 1958 का था जब वह बादशाह बना और आतंक का तांडव शुरू कर दिया उसने वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर मथुरा का केशवराय मंदिर तुड़वाया उसने शिवाजी का राज हड़पने की कोशिश भी की वहीं सिख साम्राज्य को ध्वस्त करने का कार्य भी किया उसने हिंदुओं पर जजिया कर लगा दिया था इतिहासकार कहते हैं कि औरंगजेब को ना तो हिंदू पसंद करता था ना मुसलमान और आज जो भी मुगल साम्राज्य से नफरत करते हैं उसका कारण केवल और केवल औरंगजेब था औरंगजेब अंतिम मुगल शासक था जिसकी मृत्यु 1707 ईस्वी में अहमदनगर महाराष्ट्र में हुई क्योंकि मुगलों ने केवल भारत को लूटा ही था एवं कई विशाल गगनचुंबी मंदिरों को तोड़कर मस्जिद बना दी गई जिनमें मुख्य राम जन्मभूमि, ज्ञानवापी मंदिर जहां अभी शिवलिंग शिवलिंग निकला है एवं कोर्ट में केस चल रहा है ।

आज सबसे बड़ी जिम्मेदारी मुस्लिम समाज की है जो कि कभी हिंदू ही थे किंतु मुगलों के भय से जिन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया था और उनकी आंखों के सामने ही हिंदू मंदिरों को तोड़कर मस्जिद बनाई गई थी जिसके की सबूत निरंतर मिलते ही जा रहे हैं इतिहास गवाह है एवं इतिहासकारों द्वारा लिखी गई पुस्तकों के आधार पर प्रमाणित भी हो चुका है भारत में लगभग 30,000 मंदिरों, किलो, इमारतों को तोड़कर मस्जिद बनवाई गई थी औरंगजेब के शासनकाल में तो घोषणा कर दी गई थी कि जो जितने ब्राह्मणों को मारकर उनकी जितनी जनेऊ लाएगा उसे उतनी स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी तो यह सब बातें जब पूरे सबूतों के साथ है तो मुस्लिम समाज को खुद आगे आकर ऐसी तमाम इमारतों, मस्जिदों को खुद हिंदू समाज के हवाले कर देना चाहिए एवं अपनी इबादतगाह कहीं और बना लेना चाहिए किंतु कुछ पार्टियां जिनको रोटी ही नफरत फैलाकर हजम होती है वह ऐसा होने नहीं देंगे आज ताजमहल के 22 कमरों की बात होती है जिन्हें की बंद करवा दिया गया था उसकी भी जांच होना आवश्यक है जैसा कि ज्ञानवापी मंदिर के विषय में हुआ है कुतुब मीनार लाल किला ताजमहल आदि सभी विवादित हैं और ऐसे विवादों को खुले दिल से मिल बैठकर सुलझाया जा सकता है बशर्ते कि दोनों पक्ष अपना दिल बड़ा करें एवं इस में राजनीतिक हस्तक्षेप ना हो क्योंकि कुछ लोगों का तो काम ही फूट डालो और राज करो का है ।

प्रथम पृष्ठ के शेष

भाजपा की है ६३ लाख

हो या अवैध इमारतें ने बनें। पिछले 75 साल में योजनाबद्ध तरीके से दिल्ली नहीं बनी है। ऐसे में 80 फीसदी से अधिक दिल्ली अतिक्रमण के दायरे में आएगी। तो क्या पूरी दिल्ली को तहस–नहस कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि लोगों से न कोई कागज मांगे जा रहे हैं और न कोई मौका दिया जा रहा है। नगर निगम का दस्ता बुलडोजर लेकर बस किसी भी कॉलोनी में पहुंच जाता है और घर–दुकान तोड़ने की कार्रवाई की जा रही है। 40–40 साल से रहने वालों के दस्तावेज देखने को कोई तैयार नहीं, केवल बुलडोजर चलाया जा रहा है।

केजरीवाल ने आरोप लगाया कि विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी ने कहा था कि कच्ची कॉलोनियों के लोगों को मालिकाना हक दिलाया जाएगा। चुनाव से पहले इन लोगों ने कहा था कि जहां–झुग्गी, वहीं मकान बना कर दिया जाएगा। अब इन्हें तोड़ने के लिए आ गए।

15 साल से दिल्ली नगर निगम में भाजपा का राज रहा, इन्होंने क्या किया। अवैध अतिक्रमण व इमारतें बनवाईं। अब इनका कार्यकाल 18 मई को पूरा हो जाएगा। सिर्फ दो दिन ही बचे हैं। ऐसे में केंद्र सरकार एमसीडी के चुनाव करवाएं और नई एमसीडी को निर्णय लेने दें।

हरियाणा हमारे हिस्से का...

से पूरा पानी छोड़े। सत्येंद्र जैन का बयान ऐसे समय पर आया है जब दिल्ली जल बोर्ड ने यमुना नदी के लगभग सूख जाने के कारण वजीराबाद, चंद्रवाल और ओखला जल शोधन संयंत्रों की उत्पादन क्षमता में और कमी आने की बात कही है।

दिल्ली जल बोर्ड के एक अधिकारी ने बताया कि यमुना लगभग सूख चुकी है। वजीराबाद तालाब में जल स्तर 669.40 फुट तक घट गया है, जो इस साल अब तक का सबसे कम है। नतीजतन, वजीराबाद, चंद्रवाल और ओखला जल शोधन संयंत्रों में उत्पादन क्षमता 60–70 प्रतिशत तक कम हो गई है। ऐसे में सत्येंद्र जैन ने कहा कि हरियाणा, दिल्ली के पानी का उचित हिस्सा नहीं छोड़ रहा है। यमुना का जलस्तर 674.5 फीट से गिरकर 669 फीट रह गया है। इसलिए हमारे डब्ल्यूटीपी में पानी का उत्पादन 60–70 एमजीडी तक कम हो जाता है। हालांकि सत्येंद्र जैन के बयान पर हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर का जवाब आया।

वीआईपी कल्चर का होगा ...

बचें। मुख्यमंत्री ने ऐसे गायकों से पंजाब की संस्कृति और पंजाबियत का आदर करने और गीतों के माध्यम से समाज विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देने की बजाय भाईचारे, शांति और समरसता के बंधन को मजबूत करने का आग्रह किया। आधिकारिक बयान में कहा गया कि मान ने गायकों से जिम्मेदारी के साथ सृजनात्मक भूमिका निभाने और पंजाब की सांस्कृतिक विरासत को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया।

सारा सच
www.sarasach.com
PRESENT
हमारीवाणी
SHOW YOUR TALENT
YOUR PEN
YOUR
VOICE
दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

◆वर्ष : 4 ◆अंक : 43 ◆ वीरवार 19 मई से 25 मई, 2022 ◆पृष्ठ:8 ◆मूल्य:3 रुपए, हिजरी 1443 R.N.I. NO. DELHIN/2018/76166

प्रस्तुति
भारती मिश्रा
फर्रूखाबाद (उप्र)

कृत संकल्प

रात का सन्नाटा चारों ओर पसर गया था। गौरव सिंह अपनी दुकान का ताला बन्द कर पैदल ही पैदल चल दिया था घर की ओर। वह अधिकाँशतः सबसे बाद में ही अपनी दुकान में ताला लगाता है, विशेषतः सर्दियों के मौसम में, क्या पता कब कोई सर्दी का मारा चाय से कुछ राहत पा ले। मुश्किल से पचास कदम ही चला था कि –

''बचाइए – बचाइए, अल्लाह की खातिर मुझे बचा लीजिए।'' कहकर एक लड़की उससे टकरा कर उसके पीछे खड़ी हो गयी।

सामने से चार–पाँच युवक आकर गौरव के सामने खड़े हो गए–

'' ए लड़के जान प्यारी है तो हट जा सामने से। ''

''मैं नहीं हटूँगा सामने से, मैं राजपूत हूँ, सच्चा राजपूत और अब यह लड़की मेरे संरक्षण में है इसलिए तुम सब की भलाई इसी में है कि तुम वापस लौट जाओ।

''अरे ये तो हिन्दू ही है, सुनो तुम भी हमारे साथ हो जाओ, वह तो लड़की विधर्मी है, एक विधर्मी के खातिर क्यों अपनी जान गँवाने पर तुले हो।''

''मैने कहा कि मैं राजपूत हूँ क्या सुनायी नहीं दिया तुम लोगों को ? मैं कृत संकल्पित हूँ स्त्रियों के सम्मान की सुरक्षा हेतु। स्त्रियाँ किसी जाति या मजहब की नहीं होतीं बस माँ या बहिन होती हैं और एक पुत्र या भाई के रहते किसी स्त्री का अपमान हो, असम्भव। जैसे ही गौरव सीना तान आगे बढ़ा वे सब विपरीत दिशा में भाग गए और वह लड़की गौरव के आगे–आगे अपने को सुरक्षित अनुभूत करते हुए अपने घर की दिशा में बढ़ने लगी।

शासन

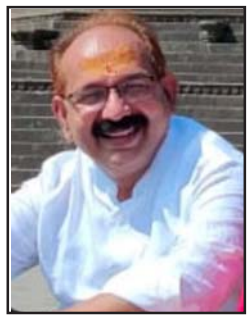

प्रस्तुति
डा. अशोक (बिहार)

शासन
शासन प्रशासन का,
एक अवतार है।
सफलता और पराक्रम का,
सुन्दर पतवार है।
शासन एक नियमित,
अनुशासन का अंग है।
हरपल हरक्षण दिखती,
इसमें कोई सतरंग है।
सरकारी हुक्म शासन,
कहलाता है।
नियमित और संतुलित,
वातावरण का भाव,
सदैव तत्पर होकर,
हरपल हरक्षण पाता है।
संचालन की गतिविधियां,
शासन कहलाती है।
योजना और नियमित रूप से,
प्रशासन व शासन का रूप,
सदैव तत्पर होकर पाती है।
जनता के लिए किया गया,
उपक्रम शासन कहलाती है।
जिन्दगी एक सवाल है,
उस प्रश्न का उत्तर बन जाती है।
सारा सच का यह सुन्दर प्रयास,
आज देश में रच रही नया इतिहास।
सामाजिक समरसता और विकास के लिए,
शासन प्रशासन बहुत जरूरी है।
प्रजातांत्रिक व्यवस्था में,
यह व्यवस्था अत्यंत आवश्यक ही नहीं,
बल्कि बन चुकी एक मजबूरी है।
शासन प्रशासन प्रजातंत्र की,
मजबूत रीढ़ है।
सुशासन और समरसता के लिए,
सुदृढ़ और सुसंस्कृत प्राचीर है।
उपेक्षित और निर्धन वर्ग के,
लोगों के लिए यह एक वरदान है।
सबको खूब पसंद है,
लगता ईश्वर का अद्भुत सम्मान है।
सम्पूर्ण साहित्यिक जगत में,
सारा सच का यह साहित्यिक,
नवोन्मेष शुरुआत हरपल हरक्षण,
दिखती है एक नयी सुबह है जैसे यहां।
इस पत्रकारिता के सौंदर्य से,
साहित्यिक जगत में,
अवतरित होने लगीं हैं नयी समां।
शासन नियमित रूप है,
जिससे चलतीं है जीवन की गति यहां।
सफलता पराक्रम को सफल बनाने में,
शासन की बड़ी महत्ता है वहां।

इतिहास

प्रस्तुति
प्रा.गायकवाड विलास
लातूर (महाराष्ट्र)

''हमें याद नहीं आती''

लहू की बहती नदियां हमें याद नहीं आती,
शहिदों के बलिदानों की कुर्बानी हमें याद नहीं आती।
आजादी जिसने भी दिलवाई हमें यहां पर,
उनकी उजड़ी हुई दुनिया हमें याद नहीं आती।

कोई लटक गये यहां फांसी के फंदों पर,
कितने हो गए यहां मातृभूमि के लिए बेघर।
ऐसे देशभक्तों की चीखें,चीर गई वो आसमां,
आवाज उन सभी देशभक्तों की हमें सुनाई नहीं देती।

आज लहराकर तिरंगा करते है हम अभिवादन,
उसी तिरंगे की छांव में खिल रहा है ये प्यारा चमन।
अब डर नहीं है हमें यहां किसी फिरंगियों का,
उसी फिरंगियों के जुल्मों की कहानी हमें याद नहीं आती।

पढ़कर वो इतिहास के पन्नें जगाओ तुम मन में देशभक्ति,
वही लहराता तिरंगा देखकर करो तुम नई क्रांति।
यही कह रही है,अपनी ये मातृभूमि सभी देशवासियों को,
सिर्फ आजादी का महोत्सव मनाकर नहीं होती प्रगति और उन्नति।

कोई मतलब नहीं,उनकी जयंती समारोह मनाने में,
कोई मतलब नहीं,युंही उनको याद करने में।
उनके दिखाए गए सभी रास्ते विरान पड़े हैं यहां,
इतने बदले है लोग यहां,जिन्हें जरा भी शर्म हया नहीं आती।

धन के सिवा कोई और उद्देश नहीं है सबका यहां,
अब ढूंढकर भी नहीं मिलेगा कल का वो प्यारा जहां।
वही भूमि है,वही आसमां है आज भी कल का यहां पर,
फिर भी इस सारे संसार को,कोई क्रांति याद नहीं आती।

लहू की बहती नदियां हमें याद नहीं आती,
शहिदों के बलिदानों की कुर्बानी हमें याद नहीं आती।
सत्य मेव जयते की यही है प्रगति और नई उन्नति,
लहराते तिरंगे की छांव में भी हमें आजादी की लड़ाई याद नहीं आती।

* * * * * * * * * *

प्रस्तुति
शाहाना परवीन
(पंजाब)

ताजमहल

निगाह पड़ी , सामने था खूबसूरत ताजमहल,
वाह! सुंदर मंजर देखा आँखो ने, सामने था ताजमहल।

कितना हसीन ताजमहल शाहजँहा ने बनवाया था,
अपनी मुमताज को जब अपने सीने से लगाया था।

ताजमहल में शाहजहाँ ने मोहब्बत को जगाया था,
प्रेम की परिभाषा को फिर नया रास्ता दिखलाया था।

मुमताज और शाहजहाँ की मोहब्बत आज पूरा विश्व दोहराता है,
आगरा की धरती पर कदम रखते ही ताजमहल याद आता है।

बहुत दूर से आते हैं पर्यटक देखने सुंदर ताजमहल,
चाँदनी रात में बेहद खूबसूरत नजर आता है ताजमहल।

कदम रखते ही ताजमहल में मोहब्बत का फसाना गूँज जाता है।
सुंदरता बरसती इतनी कि चाँद भी शरमा जाता है।

ताजमहल में बसी हैं महान आत्माएँ,
दो प्रेमियों की,
जो बताती हमें कभी खत्म नहीं होती कहानी प्रेमियों की।

यह सच है प्रेम से बढ़कर नहीं जहाँ में कुछ भी,
प्रेम एक पावक अग्नि है, अग्नि से नहीं पवित्र कुछ भी।

सारा सच के सक्रिय साहित्य लेखक

1– अनंतराम चौबे अनंत (मध्यप्रदेश)
2– पदमा ओजेन्दर तिवारी (मध्यप्रदेश)
3– डॉ रुपाली दिलीप चौधरी (महाराष्ट्र)
4– सुरेन्द्र कुमार जोशी (मध्यप्रदेश)
5– शोभा त्रिपाठी (छत्तीसगढ़)
6– रश्मि लता मिश्रा (छत्तीसगढ़)
7– प्रो डावरे रोहिणी बालचंद्र (महाराष्ट्र)
8– प्रो मनीषा विकास नादगोड़ा (कर्नाटक)
9– प्रिया रॉय (त्रिपुरा)
10– कुमारी दुलेश्वरी मांझी (छत्तीसगढ़)
11– राशिद अकेला (झारखण्ड)
15– कुमारी महक नाग (छत्तीसगढ़)
16– कृष्ण कुमार पांडेय (मध्यप्रदेश)
17– अश्मजा प्रियदर्शिनी (बिहार)
18–डॉ अशोक (बिहार)
19–दिलीप कुमार शर्मा दीप (मप्र)
20–प्रा.गायकवाड विलास , लातूर (महाराष्ट्र)
21– रेनू बाला धार (झारखंड)
22– प्रीति एम (बेंगलौर)
23– इन्दिरा कुमारी (उत्तर प्रदेश)
24–गुरुदीन वर्मा उर्फ जी.आज़ाद (राजस्थान)
25–अशोक यादव (राजस्थान)
26–गोरक्ष जाधव (महाराष्ट्र)
27–पदमा तिवारी दमोह (मप्र)

सारा सच
www.sarasach.com
PRESENT
हमारीवाणी
SHOW YOUR TALENT
YOUR PEN YOUR VOICE
दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र
◆वर्ष : 4 ◆अंक : 43 ◆ वीरवार 19 मई से 25 मई, 2022 ◆पृष्ठ:8 ◆मूल्य:3 रुपए, हिजरी 1443 R.N.I. NO. DELHIN/2018/76166

जैसलमेर का किला

प्रस्तुति
मुकेश बिस्सा
(राजस्थान)

अगर कोई किले की प्रतिकृति देखना चाहता है, जिसे टेलीविजन कार्टून ष्अरेबियन नाइट्सष में दिखाया गया था, तो जैसलमेर का किला वह जगह है। दुनिया के सबसे बड़े किलों में गिना जाने वाला जैसलमेर का किला जैसलमेर शहर का सबसे लोकप्रिय ऐतिहासिक किला है। राजस्थान के अन्य किलों के विपरीत, जैसलमेर किले में संग्रहालय, दुकानें, रेस्तरां, आवासीय आवास, होटल आदि हैं।

किला 1156 में बनाया गया था, और भाटी कबीले का एक गौरवशाली संपत्ति है। रावल जैसल जैसलमेर शहर के संस्थापक थे, और उनके शासनकाल में जैसलमेर का किला बनाया गया था। यह 250 फुट लंबा किला है, जो 30 फीट लंबी दीवारों से सुरक्षित है। किला 99 बुर्जों का निर्माण करता है, इनमें से 92 का निर्माण 1633 और 1647 के बीच किया गया था। कोई भी इस्लामी और राजपूत वास्तुकला का संकलन देख सकता है। इस किले तक पहुंचने के लिए 4 प्रवेश द्वार हैं यानी गणेश पोल, अक्षय पोल, सूरज पोल और हवा पोल। जैसलमेर का किला त्रिकुटा पहाड़ी पर स्थित है और कई युद्धों का स्थल रहा है।

किले के अंदर मुख्य आकर्षण हैं राज महल (शाही महल), जैन मंदिर और लक्ष्मीनाथ मंदिर। किला वास्तविक राजस्थान मानकों के अनुसार बनाया गया है और इसमें लाल और पीले रंग की पृष्ठभूमि के खिलाफ एक शहर है।

जैसलमेर का ऐतिहासिक किला दुनिया के कुछ जीवित स्मारकों में से एक है और शहर की एक चौथाई आबादी का घर है। इस किले से सूर्यास्त का दृश्य सभी यात्रियों और विशेष रूप से फोटोग्राफरों के लिए आंखों के लिए एक इलाज है। जैसलमेर का किला लोकप्रिय रूप से ष्सोनार किलाष के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह पीले बलुआ पत्थर से बना है। सूरज की पहली किरण जमीन पर पहुंचने पर किला सुबह के समय सुनहरा दिखता है। जैसलमेर किला परियों की कहानियों में एक महल की तरह लगता है और जैसलमेर के छोटे से शहर पर हावी है।

लाल किला

प्रस्तुति
पदमा ओजेंद्र तिवारी
दमोह (मप्र)

अमर नाम इतिहास में
लाल–लाल चोला मेरा।
हूं मैं मातृभूमि का प्रतीक
शिखा पर लगा तिरंगा मेरा।।

लहू हूं लाल शहीदों का
वीरों को देते सलामी है।
जहां फहराते झंडा प्रधानमंत्री
आते हजारों सैलानी है।।

भारत की राजधानी
यमुना के तट पर स्थित है।
आकार जिसका अष्टम कोणीय
पूर्व पश्चिम अक्ष से लंबा है।।

किला ए मुबारक नाम मेरा
शाहजहां ने बनवाया था।
1947 में नेहरू जी ने
भारतीय ध्वज फहराया था।।

भारत का लाल किला
अजूबो में एक अजूबा हू।
अद्भुत संरचना की पराकाष्ठा
हिंदी तैमूर वास्तु कला का संलयन हू।

हिंदुस्तान के दुलारो मेरा
रंग मेरा लाल रहने दो।
कालिख न पोतो दीवारों पर
मुझे आजाद रहने दो।।

सारा सच यह है कि
लाल रंग शहीदों की कुर्बानी है।
है इन किस्सों की गवाही
लिखी दीवारों परअनगिनत कहानी है।

मुगल

प्रस्तुति
ओजेंद्र तिवारी
दमोह (मप्र)

बाबर काबुल का शासक था। उसने पानीपत के प्रथम युद्ध में 1526 ई में इब्राहिम लोदी को हराकर भारत में मुगल वंश की नीव डाली। बाबर ने 16 मार्च 1527 ई में राजपूत शासक राणा सांगा को आगरा के निकट खानवा के युद्ध में 1528 ई में मेदिनी राय को चंदेरी के युद्ध में तथा 1529 ई में अफगानों को घाघरा के युद्ध में परास्त किया।इन विजयो से भारत में मुगल साम्राज्य को मजबूती मिली।
26 दिसंबर 1530 ईको आगरा में बाबर की मृत्यु हो गई। मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूं दिल्ली का शासक बना। शेरशाह ने 1539 ई में
चौसा के युद्ध में और कन्नौज के साथ 1540 ई के युद्ध में परास्त कर दिल्ली की गद्दी प्राप्त की।

सारा सच यह है कि निर्वासित जीवन के दौरान 15 अक्टूबर 1542 ई को अमरकोट के राजा वीर साल के महल में हुमायूं को अकबर के रूप में पुत्र प्राप्त हुआ। 13 वर्ष की कम उम्र में ही 1556 ई में दिल्ली की गद्दी पर बैठा ।बैरम खां अकबर का संरक्षक था।

अकबर का पहला युद्ध दिल्ली और आगरा के बीच आदिशाह शूर
के प्रधानमंत्री हेमू के साथ 1556 ई में पानीपत के मैदान में हुआ। इस युद्ध में हेमू को पराजित कर अकबर ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया। अकबर के दरबार कीशान नवरत्न थे।
अकबर के नवरत्न–1– अबुल फजल(विद्वान और सलाहकार)2– राजा मानसिंह अनुभवी सेनापति3 राजा टोडरमल प्रसिद्ध भूमि सुधारक 4– तानसेन संगीतकार 5– बीरबल चतुर विद्वान6 हकीम हुककाम राजबैध 7– अब्दुल रहीम खानखाना कवि8–फैजी (कवि औरदार्शनिक)और मुल्ला दो प्याजा(मनोरंजनकर्ता)थे।

अकबर ने आगरा के निकट फतेहपुर सीकरी नामक सुन्दर नगर बसाया। वहां सुंदर इमारतें बनवाई

अकबर की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र सलीम जहांगीर के नाम से 1605 ई मे गद्दी पर बैठा जहांगीर के शासन की महत्वपूर्ण उपलब्धि उसकी न्याय व्यवस्था थी पीड़ित लोगों की फरियाद सुनने के लिए उसने राज महल की दीवाल पर सोने की जंजीर वाली घंटी लगवा दी थी जहांगीर ने लिखा है इंसाफ की सुस्ती और तरफदारी देखें तो बे मजनूम लोग(पीड़ित) इस जंजीर को हिला दिया करें ताकि मैं उनकी आवाज सुनकर खुद फरियाद सुन सकू। जहांगीर की मृत्यु के बाद सन 1628 ईस्वी में उसका पत्र खुर्रम शाहजहां के नाम से गद्दी पर बैठा। विश्व प्रसिद्ध ताजमहल का तथा मयूर सिंहासन का निर्माण शाहजहां ने कराया था। जहांगीर शाहजहां के शासनकाल वैभव विलासिता का युग कहा जाता है।

सन1658 ईस्वी में औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को गद्दी से हटाकर आगरा के किले में कैद कर लिया और स्वयं मुगल सम्राट बना। औरंगजेब इस्लाम धर्म का कट्टर अनुयायी था ।इसकी धार्मिक कट्टरता ही मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बनी। उसकी कठोर धार्मिक नीति के कारण ही उस के शासनकाल में अनेक विद्रोह हुए ।इनमें बुंदेलो,जाट, सतनामी, सिक्ख तथा मराठा विद्रोह प्रमुख थे। सारा सच यह है कि इन विद्रोह के कारण मुगल साम्राज्य कमजोर होता चला गया।

प्रस्तुति
ओमप्रकाश बिश्नोई
(राजस्थान)

शासन

शासन शब्द यूनानी भाषा के शब्द ष्कुबेरनाओष से लिया गया है जिसका मतलब परिचालन । अर्थात्
किसी देश के प्रशासन और कानून व्यवस्था को जो अधिकार संचालित करते हैं वही शासन है। या यह कहें की किसी देश में जनहित के लिए प्रभावी ढंग से अच्छी नीतियां बनाना और उन्हें प्रशासन के मार्फत लागू करना तथा उस पर यथोचित न्याय प्रदान करना ही शासन है। परंतु प्रशासन और शासन में अंतर है। प्रशासन शासन के आदेशों के द्वारा बनाई गई नीतियों को लागू कर उस पर न्याय प्रदान करने का काम करता है। या यह कहें कि शासन और जनता के बीच की कड़ी प्रशासन है। क्योंकि इतिहास गवाह हैं प्रशासन ने कई बार शासन की गलत नीतियों का पुरजोर विरोध किया है। और शासन ने कई बार प्रशासन को दवाब में लेकर कार्य किया। शासन के भी कई प्रकार है परंतु शासन के तरीके केवल दो ही है – पहला जनहितकारी शासन अर्थात् सुशासन और दूसरा जो जनता के हितों एवम् अधिकारों पर अत्याचार करने वाला अर्थात् कुशासन।

शासन का एक धर्म होता है। और वह धर्म यह कहता है की शासन सबको एक नजर से देखे और बिना किसी भेदभाव के रोजगार, न्याय , सुरक्षा, शिक्षा और स्वतंत्रता प्रदान करे।
शासन सुख भोगने के लिए ना होकर अपितु सुख प्रदान करने के लिए होना चाहिए।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। अगर हम बात करे आज की शासन व्यवस्था की तो हम देखते है की आज की शासन व्यवस्था प्रशासन को अपने हाथों की कठपुतली बनाकर मन चाहा नाच नचा रही है।
आज हम तुलसी दास जी की तरह यह नहीं कह सकते कि कोऊ नृप होय हमें का हानी।

* * * * * * * * * * * * * *

फिल्मी दुनिया

वेब सीरीज करने से हिचकिचा रही हैं पिया बाजपेयी

06 जनवरी 1989 को उत्तर प्रदेश के इटावा में जन्मी पिया बाजपेयी ने अपनी शुरूआती पढ़ाई दिल्ली में पूरी की। वह बचपन से ही एक्ट्रेस बनना चाहती थी लेकिन पेरेंट्स इसके विरोधी थे। दिल्ली जाकर पिया ने कम्पूयटर में ग्रेजुएशन किया। इसके बाद छोटी मोटी नौकरियां भी की लेकिन अपनी उन नौकरियों से वह कतई संतुष्ट नहीं थी, इसलिए बाद में नौकरी से मिले पैसों के बल पर मुंबई आ गई और एक्टर बनने के लिए संघर्ष शुरू कर दिया।

मॉडलिंग के दौरान पिया को कई बड़े कलाकारों के साथ काम करने का अवसर मिला। एक चॉकलेट ब्रांड वाली एड. फिल्म में वह अमिताभ बच्चन के साथ नजर आईं।

मॉडलिंग के दौरान उन्हें तमिल भाषा की एक कॉमेडी फिल्म 'पोई सोल्ला पूर्म' का ऑफर मिला जिसे पिया ने स्वीकार कर लिया। उस फिल्म के बाद उन्हें साउथ की फिल्मों के ऑफर मिलने शुरू हो गये। अब तक वह तमिल, तेलुगु, मलयालम और हिंदी में 15 से अधिक फिल्में कर चुकी हैं।

पिया की फिल्म 'अभिमन्यू अनुदुम' दर्शकों को भरपूर मनोरंजन करने वाली फिल्म थी। इसके अलावा पिया ने बोल्ड शार्ट फिल्म 'द वर्जिन' में भी अपनी अपीयरेंस से दर्शकों को हैरान कर दिया था।पिया आज बॉलीवुड, टॉलीवुड और सोशल मीडिया का जाना पहचाना चेहरा है। इस मुकाम को हासिल करने के लिए लोग जी तोड़ मेहनत करते हैं, तब भी उन्हें यह पोजीशन हासिल नहीं हो पाती लेकिन पिया ने बहुत कम उम्र में वह मुकाम हासिल किया है।

पिया की आने वाली फिल्मों में पिंक के निर्देशक अनिरूद्ध राय चौधरी की 'लॉस्ट', उनके कैरियर के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण है। इसमें वह राहुल खन्ना, यामी गौतम और पंकज कपूर के साथ नजर आएंगी।

पिया बाजपेयी, वेब सीरीज करना चाहती हैं लेकिन उनमें जिस तरह से जबर्दस्ती के बोल्ड सीन्स होते हैं, उसकी वजह से वह ऑफर स्वीकार करने से थोड़ा हिचकिचा रही हैं। पिया का कहना है कि इन्हें करने से बेहतर वह घर पर बैठना ज्यादा पसंद करेंगी।

फिल्में हो या फिर वेब सीरीज, उनमें पिया बोल्ड सीन करने के लिए तैयार हैं लेकिन स्क्रिप्ट में वह ऑडियंस के लिए जबर्दस्ती ठूंसे हुए नहीं लगना चाहिए।

गर्मियों में भूलकर भी इन जगहों पर न जाएं

हर साल गर्मियों की छुट्टी में लोग कहीं ना कहीं घूमने जाते हैं। यह एक ऐसा समय होता है जब आप अपने परिवार के साथ अच्छा समय बिताते हैं और खूब मौज मस्ती करते हैं। ऐसे में गर्मियों की छुट्टियों में भारत की कई जगहों पर सैलानियों की भारी भीड़ देखने को मिलती है। लेकिन गर्मियों में कहीं भी घूमने का प्लान बनाने से पहले वहां का तापमान जरूर देख लें। गर्मियों में तेज धूप और लू में कहीं बाहर घूमना किसी सिरदर्द से कम नहीं है। ऐसा में अगर आप किसी ऐसी जगह घूमने का प्लान बना लेते हैं जहां भीषण गर्मी होती है तो आपका समय और पैसा दोनों बर्बाद होंगे। आज के इस लेख में हम आपको बताएंगे कि गर्मियों में कहां जाने से बचना चाहिए –

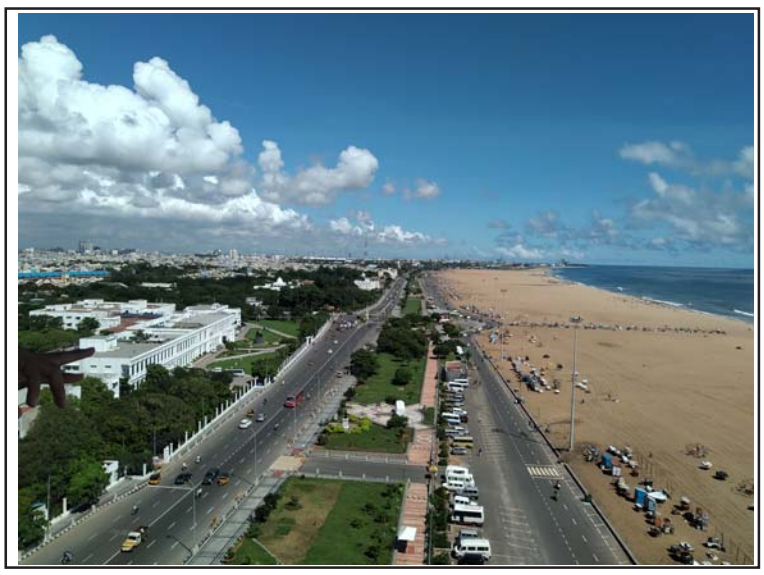

वीकेंड ट्रिप के लिए लोग अक्सर आगरा घूमने का प्लान बनाते हैं। यहाँ पर मौजूद दुनिया के सातवें अजूबे को देखने के लिए दुनियाभर से लोग आते हैं। आगरा में घूमने के लिए और भी कई बेहतरीन जगहें हैं। लेकिन गर्मी में यहाँ घूमना आपके लिए सिरदर्द बन सकता है। दरअसल, गर्मियों के मौसम में आगरा का तापमान बहुत बढ़ जाता है। तेज धूप में संगमरमर से बना ताजमहल भी तपने लगता है और आप कहीं बाहर भी नहीं घूम सकते हैं। इसलिए यहाँ गर्मियों में जाने का प्लान ना ही बनाएं।

राजस्थान का जैसलमेर न केवल भारतीय बल्कि विदेशी पर्यटकों की लिस्ट में भी शामिल है। जैसलमेर को गोल्डन सिटी के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ हर साल दुनिया भर से लाखों पर्यटक आते हैं और सफारी का लुफ्त उठाते हैं। खाना की गर्मियों में जिप्सी गिरी शहर में घूमना काफी कठिन हो सकता है। गर्मियों में जैसलमेर का टेंपरेचर 40 डिग्री सेल्सियस के पार चला जाता है। इतनी भीषण गर्मी में जैसलमेर की यात्रा करना अच्छा आइडिया नहीं है।

घूमने के शौकीन लोगों की लिस्ट में गोवा का नाम सबसे ऊपर आता है। यहां लोग अपने दोस्त या पार्टनर के साथ मौज मस्ती करने के लिए पहुंचते हैं। यहां के खूबसूरत बीच, नाइटलाइफ और खुला माहौल युवाओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। लेकिन गर्मियों के मौसम में गोवा घूमने का प्लान बनाने से पहले एक बार जरूर सोच लें। गर्मियों में तेज धूप में आप ठीक तरह से घूम नहीं पाएंगे और आपके पैसे सिर्फ बर्बाद ही होंगे।

चेन्नई, दक्षिण भारत

दक्षिण भारत का चेन्नई शहर घूमने के लिहाज से बेहतरीन है। यहां कई सारे मंदिर, बीच और अन्य दार्शनिक स्थल हैं। लकी गर्मियों में यहां का पर बहुत अधिक बढ़ जाता है। ऐसे में गर्मियों के मौसम में चेन्नई में घूमना मुश्किल हो जाता है। इसलिए आप गर्मियों में चेन्नई घूमने का प्लान ना ही बनाएं।

औषधीय गुणों से भरपूर है काला लहसुन

आपकी सेहत

हमारे घर की रसोईयो में सालों से हर दिन के खाने में सफेद लहसुन का इस्तेमाल होता आ रहा है। सफेद लहसुन के कई फायदे होते हैं जिनके बारे में हम सभी अच्छे से वाकिफ होंगे। लेकिन आपको यह बात जानकार हैरानी होगी कि सफेद लहसुन के अलावा काला लहसुन भी होता हैं। जी हाँ, आपने बिलकुल सही सुना। काला लहसुन, सफेद लहसुन का ही एक रूप होता है। इसे फर्मेंटेशन के द्वारा तैयार किया जाता है। यह कई औषधीय गुणों से भरपूर होता है और डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल जैसी बीमारियों में फायदेमंद साबित होता है।

सफेद लहसुन की तुलना में काले लहसुन में एंटी ऑक्सीडेंट ज्यादा पाए जाते हैं। इसके अलावा काले लहसुन में पॉलीफेनॉल, अल्कलाइन और फ्लेवोनाइड तत्व भी अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं। यह सभी तत्व ब्लड कैंसर, पेट के कैंसर और कोलन कैंसर से बचाव करने में मदद करते हैं।

काले लहसुन दिल के रोगियों के लिए काफी फायदेमंद साबित हो सकते हैं। काले लहसुन में एलिसिन मौजूद होता है जो प्राकृतिक रूप से खून पतला करने में मदद करता है। इसकी वजह से हार्ट ब्लॉकेज से संबंधित परेशानियाँ नहीं होती हैं। इसके अलावा यह ब्लड में ट्राइग्लिसराइड्स और कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को भी कम करता है।

काले लहसुन में एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल गुण पाए जाते हैं, जो शरीर की इम्युनिटी को भी बढ़ाने में मदद करते हैं। इसके अलावा यह डायबिटीज के मरीजों के लिए काफी फायदेमंद होते हैं।

आप काले लहसुन का सेवन मसाले की तरह कर सकते हैं या फिर रोजाना इसकी एक कली को कच्चा चबा कर भी खा सकते हैं।

खाली पेट चाय से नुकसान : खाली पेट चाय पीने की आदत काफी खराब होती है। ऐसा इसलिए क्योंकि चाय में काफी मात्रा में कैफीन मौजूद होता है। इसके अलावा इसमें एल–थायमिन और थियोफाइलिइन भी मौजूद होता है जो उत्तेजित करने का कार्य करते हैं।खाली पेट चाय पीने से बाइल जूस की प्रक्रिया अनियमित होती है। जो बाद में जी मिचलना या घबराहट जैसी समस्याओं का कारक बन सकती है।अधिक्तर लोग स्ट्रांग टी यानी ज्यादा चाय पत्ती वाली चाय पीने पसंद करते हैं।

हालांकि, वो इस बात से अंजान होते हैं कि इससे पेट की अंदरुनी सतह में जख्म हो सकता है। इतना ही नहीं, इस तरह की चाय पीने से अल्सर का भी खतरा रहता है। खाली पेट चाय पीने से हमारे व्यवहार पर भी काफी बुरा असर होता है। हालांकि, इससे वो अंजान होते हैं लेकिन चिड़चिड़ाहट जैसी समस्या उनमें नजर आने लगती है। ज्यादा देर की बनी चाय को भी बार–बार गर्म करके नहीं पीना चाहिए। ये सेहत के लिए काफी नुकसानदायक साबित हो सकता है।

अगर आप सुबह खाली पेट दूध और चीनी वाली चाय पीते हैं तो इससे आपका वजन बढ़ता है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें घुली चीनी सीधा हमारे शरीर में जाती है और दूध में पत्ती डलने से एंटीऑक्सीडेंट का प्रभाव खत्म हो जाता है।

दिल्ली भाजपा ने केजरीवाल सरकार के खिलाफ शुरू किया 'पोल खोल अभियान'

नई दिल्ली । दिल्ली भाजपा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता, प्रभारी बैजयंत जय पांडा, राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम एवं नेता प्रतिपक्ष श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी सहित दिल्ली के वरिष्ठ नेताओं द्वारा केजरीवाल सरकार के झूठे वायदों की पोल खोलने हेतू तालकटोरा स्टेडियम में पोल खोल अभियान' का शुभारंभ किया गया ।

भाजपा कार्यकर्ताओं से खचाखच भरे स्टेडियम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने कहा कि केजरीवाल सरकार ने पिछले सात सालों से जिस तरह से झूठ फैलाकर अपने राजनीतिक विस्तार के लिए जनता को गुमराह किया है, उसके लिए भाजपा कार्यकर्ताओं ने कमर कस ली है।

यह पोल खोल अभियान 15 मई से शुरु होकर 30 मई तक चलेगा। इस अभियान के तहत भाजपा कार्यकर्ता घर–घर जाकर केजरीवाल की जनविरोधी नीतियों के बारे में सबको जागरुक करेंगे। पार्टी द्वारा 25 लाख परिवारों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा गया है। दिल्ली सरकार के झूठ का उजागर भाजपा कार्यकर्ता इस अभियान के तहत करेंगे।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने यह भी कहा कि दिल्ली के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि यहां एक ऐसा मुख्यमंत्री बैठा है जो सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल खड़े करता है तो कभी विधानसभा में बैठकर कश्मीरी पंडितों के साथ हुए बर्बरता पर अट्टाहास करके मजाक उड़ाता है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में अगर कानून व्यवस्था बिगड़े तो केंद्र सरकार जिम्मेदार, ऑक्सीजन ना आए तो केंद्र सरकार जिम्मेदार, गंदगी दिखें तो एमसीडी, बाकी जलती बसें, गंदा पानी, मैली यमुना, प्रदूषण, 2021 में हुए दंगे, रामनवमी पर दंगे, आम आदमी पार्टी का मोहल्ला क्लीनिक, गली–गली शराब परोसना ये सब कुछ केजरीवाल सरकार को दिखाई नहीं देता। जबकि यह सब उनकी सरकार की देन है।

विडम्बना है कि दिल्ली सरकार घर–घर पानी पहुंचाने की जगह शराब पहुंचा रहे हैं। केंद्र सरकार द्वारा दिए गए राशन को ब्लैक बेचने का काम किया जा रहा है।

बेरोजगारी के बारे में केजरीवाल ने कई बार झूठ बोला 2015 में उन्होंने कहा कि वे आठ लाख बेरोजगारों को रोजगार देंगे और अब 20 लाख लोगों को रोजगार देने की बात कह रहे हैं , लेकिन जब आरटीआई डाली गई तो पता चला कि सिर्फ 440 लोगों को रोजगार देने का खुलासा हुआ । केजरीवाल सरकार मस्जिद के इमाम को तो 16 से 18 हजार रूपये दे सकती है, लेकिन मंदिर के पुजारियों के नाम पर एक शब्द नहीं बोलते।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं दिल्ली प्रभारी श्री बैजयंत जय पांडा ने कहा कि दिल्ली की केजरीवाल सरकार ने हर मुद्दे पर जो झूठ बोला है, वह जग जाहिर है। शिक्षा एवं परिवहन के क्षेत्रों में दिल्ली सरकार ने सिर्फ झूठ ही बोला है। जमीन पर कुछ काम नही किया ।

राष्ट्रीय मंत्री एवं दिल्ली की सह प्रभारी डॉ. अलका गुर्जर ने कहा कि दिल्ली में 850 से अधिक शराब के ठेके खोलकर केजरीवाल सरकार ने अपराध बढ़ाने का काम किया है, उसके लिए दिल्ली की महिला उन्हें माफ नहीं करेगी।

इस मौके पर प्रदेश भाजपा के पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन एवं विजय गोयल, सांसद एवं पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी, सांसद प्रवेश साहिब सिंह, रमेश बिधूड़ी, हंसराज हंस, प्रदेश संगठन महामंत्री श्री सिद्धार्थन, असम के सह–प्रभारी श्री पवन शर्मा, जम्मू–कश्मीर से सह–प्रभारी श्री आशीष सूद, प्रदेश महामंत्री श्री हर्ष मल्होत्रा एवं श्री दिनेश प्रताप सिंह सहित प्रदेश, मोर्चा, जिला, मंडल के पदाधिकारी उपस्थित रहे ।

निगम व सदर बाजार फेडरेशन ने संयुक्त रूप से चलाया डेंगू चिकनगुनिया बचाव अभियान

नई दिल्ली । सदर बाज़ार क्षेत्र में नॉर्थ दिल्ली के पूर्व मेयर और पार्षद श्री जय प्रकाश जेपी और फेडरेशन ऑफ सदर बाज़ार ट्रेड्स एसोसिएशन के द्वारा संयुक्त रूप से डेंगू और चिकनगुनिया से बचाव के बारे में एक जनजागरण अभियान चलाया गया जिसके अंतर्गत लोगों को डेंगू और चिकनगुनिया से बचाव के बारे में जागरूक किया गया और क्षेत्र में दवाई का छिड़काव और सफाई अभियान भी चलाया गया।

अभियान में जयप्रकाश जेपी, फेडरेशन के चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा, अध्यक्ष राकेश कुमार यादव, महासचिव श्री कमल कुमार और राजेंद्र शर्मा के अलावा स्थानीय निवासी भी सम्मिलित हुए।

परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने कहा कि जेपी भाई ने जिस प्रकार यह कार्य शुरू किया है यह सराहनीय है इससे आने वाले समय में बीमारियों से बचाव के साथ–साथ व्यापारी जागरूक भी होंगे पहले भी करोना कॉल के समय में जेपी भाई ने पूरी मार्केट को सेंसटाइज करवाया था जिससे करोना से काफी व्यापारियों का बचाव हुआ था।

इस अवसर पर जेपी भाई ने कहा के सदर बाजार के व्यापारी और यहां के निवासी मेरा परिवार है मेरा कर्तव्य है सफाई का पूरा ध्यान रखो जिसके लिए समय–समय पर नगर निगम के साथ मिलकर इस प्रकार के कार्य करते रहता हूं।

दिल्ली में खुला पंचतत्व उद्यान, पांच प्राकृतिक वस्तुओं से किया गया तैयार

नई दिल्ली। रोहिणी सेक्टर–15 में स्थानीय लोगों के लिए पंचतत्व उद्यान खोला गया है। यहां पर जल, मिट्टी, पत्थर सहित पांच प्रकृति वस्तुओं से मिलाकर एक ट्रैक तैयार किया गया है, जिसकी सहायता से नागरिकों को त्वचा रोग, उच्च रक्तचाप, हाइपरटेंशन जैसी बीमारियों से छुटकारा पाने में मदद मिलेगी।

भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री सुश्री अल्का गुर्जर ने रोहिणी सेक्टर 15 स्थित पंचतत्व उद्यान का उद्घाटन किया। इस मौके पर पूर्व महापौर व स्थानीय निगम पार्षद प्रीति अग्रवाल भी उपस्थित थीं। अलका गुर्जर ने कहा कि उत्तरी दिल्ली नगर निगम ने अनूठे पंच तत्व उद्यान का निर्माण कर एक अच्छी पहल की है।

इस पंचतत्व उद्यान से नागरिकों को अपने मन व शरीर को स्वस्थ रखने में सहायता मिलेगी। प्रीति अग्रवाल ने बताया कि इस पंच तत्व उद्यान में कपूर, इलायची व अन्य महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों के पौधे लगाए गए हैं, जो वातावरण को शुद्ध करने में मदद करते हैं। उन्होंने बताया है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नागरिकों को स्वस्थ रहने का एक मंत्र दिया है :फिटनेस की डोज, आधा घंटा रोजः और नागरिकों को स्वस्थ रखने में यह पंच तत्व उद्यान काफी सहायक सिद्ध होगा। यहां नागरिक जड़ी बटी वाले पौधों और शुद्ध वातावरण के बीच व्यायाम कर सकेंगे।

Vinod Kumar
9899317267
Varun Kumar
9212738941
9999963395

VARUN
Canvas-Company

Wholesaler of :
All Kinds of Blankets, Cotton Cloth.
Spl. in : Blankets, Plastic Tirpal, Plastic Tubes, Cotton Cloths, Tents, Car-Scooter Cover

12-A, Azad Market, Near Pul Mithai, Delhi-6
E-mail: varuncanvasco@yahoo.co.in

पुस्तक से भगत सिंह का पाठ हटाना शहीद का अपमान : केजरीवाल

नई दिल्ली। स्कूली पुस्तक से भगत सिंह पर एक पाठ को हटाने को लेकर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कर्नाटक में भाजपा सरकार पर निशाना साधा है। केजरीवाल ने इसे स्वतंत्रता सेनानी के बलिदान का अपमान बताते हुए फैसले को वापस लेने की मांग की है।

अरविंद केजरीवाल ने ट्विटर पर लिखा कि देश शहीदों के अपमान को बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने भाजपा से पूछा कि भाजपा के लोग भगत सिंह से इतनी नफरत क्यों करते हैं।

उनकी यह प्रतिक्रिया ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन (एआईडीएसओ) और ऑल इंडिया सेव एजुकेशन कमेटी (एआईएसईसी) सहित कुछ संगठनों द्वारा दावा किए जाने के एक दिन बाद आई है।

संगठनों ने दावा किया है कि कर्नाटक सरकार ने कक्षा 10वीं की कन्नड़ पुस्तक से स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह का एक पाठ हटा दिया है, जबकि इसमें आरएसएस के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार का एक भाषण शामिल किया गया है। आप ने भगत सिंह पर अध्याय हटाने को शर्मनाक बताते हुए कर्नाटक सरकार से पुस्तक में पाठ बहाल करने की मांग की है।

चुप्पी तोड़ें

यदि कोई भी सरकारी अधिकारी अपने पद का दुरूपयोग कर रहा है या कोई भी विभागीय अधिकारी आपका आर्थिक, मानसिक व शारीरिक शोषण करता है या फिर आपको किसी भी प्रकार की शिकायत है तो कृपया अपनी शिकायत/जानकारी पर हमें लिख भेजें। आपकी समस्या का समाधान किया जाएगा। आपकी इच्छानुसार आपका नाम व पहचान गुप्त रखी जाएगी।

लिखें

मुख्य संपादक : सलीम अहमद

सारा सच

12/596 गली नंबर: 2, वेस्ट गुरू अंगद नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

E-mail : sarasach786@gmail.com

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक व संपादक **सलीम अहमद** द्वारा आला प्रिंटिंग प्रैस, 3636, कटरा दीना बेग, लाल कुआँ, दिल्ली–110006 से मुद्रित व 12/596, गली नंबर–2, वेस्ट गुरू अंगद नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–92 से प्रकाशित।
संपादक : **सलीम अहमद,** सारा सच साप्ताहिक समाचार पत्र में प्रकाशित लेखों व समाचारों की सहमति आवश्यक नहीं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।